

॥ श्रीपञ्चरक्षाधारणी ॥

पुस्तकालय

नेपाल परम्परागत बीज एवं रोग
नेपाल कृषिपालन महाविद्यालय काठमाडौं
सुनसरी

सम्पादन

डा.डा. परित माथ बज्राचार्य
सि.सं.१५४७, काठु चौबी, कृष्णतीर्थबाट
२०१७ असार १४

निष्पन्नता

बीम रत्न बज्राचार्य

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.





[illegible]

| Year | 1999 | 2000 | 2001 |
|------|------|------|------|
| 1999 | 100 | 100 | 100 |
| 2000 | 100 | 100 | 100 |
| 2001 | 100 | 100 | 100 |

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

सर्वभूतेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वदेविभ्यः स्वाहा ॥ सर्वविलासिभ्यः स्वाहा ॥ सर्वपद्मभिरभ्यः स्वाहा ॥ सर्वकुम्भाभ्यः स्वाहा ॥ सर्वपुलकेभ्यः
 स्वाहा ॥ सर्वकटपुलकेभ्यः स्वाहा ॥ सर्वदुष्टदुष्टेभ्यः स्वाहा ॥ ओं ह्रु २ स्वाहा ॥ ओं कुरु २ स्वाहा ॥ ओं कुरु २ स्वाहा ॥ ओं
 कुरु २ स्वाहा ॥ ओं कुरु २ स्वाहा ॥ ओं ह्रु २ सर्वेतापुन् स्वाहा ॥ ओं दह २ सर्वदुष्टान् स्वाहा ॥ ओं राघ २ सर्वदुष्टदिकान्पवित्रान्
 स्वाहा ॥ ॥ ये शिवार्तिविनयलेपाः सर्वेषां शरीरं ज्वालय सर्वदुष्टीभक्तानां स्वाहा ॥ ज्योतिषाय स्वाहा ॥ प्रज्योतिषाय स्वाहा ॥
 दीप्यमानाय स्वाहा ॥ ब्रह्मज्वालाय स्वाहा ॥ समस्तज्वालाय स्वाहा ॥ यज्ञिभक्त्याय स्वाहा ॥ पूर्वभक्त्याय स्वाहा ॥ कालाय स्वाहा ॥
 महाकालाय स्वाहा ॥ मृत्युकालाय स्वाहा ॥ वीरिणीनां स्वाहा ॥ राज्ञीणां स्वाहा ॥ देविपुत्राभ्यानां स्वाहा ॥ सर्वद्विपुत्राणां
 स्वाहा ॥ आकाशमातुणां स्वाहा ॥ समुद्रवर्हिणीनां स्वाहा ॥ गविभक्त्यानां स्वाहा ॥ निम्बभक्त्यानां स्वाहा ॥ विमलज्वालाय स्वाहा ॥

वेदान्तशास्त्रं स्वाहा ॥ अवेदान्तशास्त्रं स्वाहा ॥ सर्वज्ञेयः स्वाहा ॥ सर्वज्ञेयविभीषणः स्वाहा ॥ हठ २ स्वाहा ॥ श्री स्वाहा ॥ भू
 स्वाहा ॥ भुवः स्वाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ त्रिलो २ स्वाहा ॥ धर्मीय स्वाहा ॥ धार्मीय स्वाहा ॥ धर्मिः स्वाहा ॥
 धर्मोदायुः स्वाहा ॥ त्रिलो २ स्वाहा ॥ त्रिलो २ स्वाहा ॥ त्रिलो २ स्वाहा ॥ त्रिलो २ स्वाहा ॥ कुल २ स्वाहा ॥ श्रीमान्ध
 स्वाहा ॥ मान्दन्धन्ध स्वाहा ॥ सर्वलक्षणम् २ स्वाहा ॥ ज्ञेय २ स्वाहा ॥ ज्ञेय २ स्वाहा ॥ हिन्द २ स्वाहा ॥ हिन्द २
 स्वाहा ॥ ज्ञेय २ स्वाहा ॥ ज्ञेय २ स्वाहा ॥ मोक्ष २ स्वाहा ॥ मोक्षिणमुद्धे स्वाहा ॥ सुखं सुखिणमुद्धे स्वाहा ॥ चन्द्रे २
 पूर्वचन्द्रेस्वाहा ॥ श्रीराम स्वाहा ॥ विमोक्षिण स्वाहा ॥ हरेभ्यः स्वाहा ॥ नन्देभ्यः स्वाहा ॥ त्रिभुवः स्वाहा ॥ मोक्षी स्वाहा ॥
 मोक्षिणस्वाहा ॥ पुष्टिपति स्वाहा ॥ जलपट्टिनि स्वाहा ॥ जलपट्टेनमो स्वाहा ॥ श्रीपति स्वाहा ॥ श्रीपट्टेनमो स्वाहा ॥

श्रीज्जलिननि स्वाहा ॥ भुवि स्वाहा ॥ तम्रुचि स्वाहा ॥ केवली स्वाहा ॥ श्री सर्वलक्षणलक्ष्मीं प्रवर्तयितुमर्ह्ये लक्षणशृङ्गे मे लक्षणं
 सर्वलक्षणं स्वस्ति लक्षणं लक्षणं सर्वलक्षणं च स्वाहा ॥ श्री भुवि २ विभुनि २ त्रिभुविभुनि भगवति भव्यभुवि भव्यभुवि श्री २
 श्री २ श्री २ सर्वलक्षणलक्षणशृङ्गे स्वाहा ॥ श्री भुवि २ भुविभुवि त्रिभुविभुवि मां सर्वलक्षणं सर्वलक्षणं सर्वलक्षणं
 महालक्षणलक्षणशृङ्गेः सर्वलक्षणलक्षणशृङ्गेः स्वाहा ॥ ॥ सर्वलक्षणलक्षणलक्षणः सर्वलक्षणलक्षणलक्षणः स्वाहा ॥ ॥
 हेतुभवा हेतुभवा लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ ॥
 सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥ सर्वलक्ष्मीं लक्षणः ॥

गणगेश्वरीणि गौरीणि पूज्यन्ति स्वाहा ॥ शिवानि स्वाहा ॥ तृक्षावनि स्वाहा ॥ गन्धर्वी स्वाहा ॥ एतानि स्वाहा ॥ सर्वकालोद्भूतपुत्रपौत्राणि
 स्वाहा ॥ ॥ तत्र मानसपुत्रान्दीप्तं दुन्दुभ्यः कथनं पठ्य ॥ स्वाद्यवेदं अक्षयि विन्दयि भूतवीने भूतगमे पशूनि छयि हरे हरे पशूनि
 निधुमे सुधुमे क्षुधामारण्ये चण्डे चण्डो हारीये हरे हरिणि स्वाहा ॥ ॥ तानि दुमर्दिनि अदन्त अजयन् पालयमहापशुमूषानि
 भक्षितवन्ति ॥ स्वाद्यवेदं ॥ महासाहस्रप्रमोद्वीथुषं महाबाधूनि महाशीलवती महाप्रलम्भा महामन्वानुभारिणीयेति ॥ स्वस्त्वस्तु
 तद्भिन्नैश्च तिस्रस्तु तिस्रं मम कर्णधारस्तु सर्वसत्त्वानाम् स्वाहा ॥ ॥ अर्घ्यमहापशुपदप्रवीणैर्विष्णुनक्षत्रीद्वीपमन्त्राणां
 सम्पन्ना ॥ ॥ ये धर्मं हेतुप्रदन्ता हेतुस्तेषां लक्षणतः स्वस्वदक्षे निर्गोपी स एवम्वादी महाधर्मतः ॥ यमी कृत्तल्लाप ॥ यमी
 दुर्मर्दल्लाप ॥ यमी संघाल्लाप ॥ ॥ यमी स्वस्वतल्लाप यमी तदस्वमिहोक्त यमी यौतव्यमुदीत्तल्लाप ॥ ॥ सुखं ॥

वा वा वा वा ॥ १८ ॥ वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ॥ १८ ॥ जाम जाम जाम जाम जाम जाम जाम जाम जाम जाम ॥
 १८ ॥ दमदमनि तालतानि ज्वलज्वलनि नयनयनि दृष्टुनि नज्जुनि वपुनि लकीटुनि तपनि ताननि नयनि नयनि हल्लिनि कल्लिनि
 कंठनि मट्ठिनि मणिपुलिने क्षेत्रकनि जलनि वांवरि वांवरि वांवरि कल्लरि तपनि वांवरि ज्वलनि दम दृष्टुनि लुल्लुल्ले गोलाया वेलाया
 पल्लेलाया वपुल्लु वेला समल्लेख इतिहसिण स्याता ॥ नमो बुद्धाय नमो इयमांस नमः संभाव ॥ नमो महाभायुर्धे विद्याराज्ये ॥ लघवा
 ॥ ह ह ह ह ह ह ॥ १९ ॥ नागलेलेले ललेलेले दुल्लेलेले ह्व २ विज २ दृष्ट २ लुल्ल २ इतिहसिण वेज्जिनि जल्ल दल्लमेला
 इतिहसिणलेलेला इतिहसिणमेला इतिहसिणलेलेलेले इतिहसिणलेलेले दुम्ये लुल्लुम्ये लीम २ गोला वेला वेला नयला विमला इतिहसि
 २ इतिहसि २ नमो बुद्धाय विज्जिहसिण गोलीहसिण नमोऽहसां जामजामां वपुल्लु वेला समल्लेख लल्लु विजल्लु नमो बुद्धाय स्याता

स्वाहा ॥ देवानां स्वाहा ॥ नावानां स्वाहा ॥ अमुनाणां स्वाहा ॥ मरुताणां स्वाहा ॥ वसुधाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥
 विन्नराणां स्वाहा ॥ सतीरवाणां स्वाहा ॥ वधूणां स्वाहा ॥ वधूवाणां स्वाहा ॥ प्रेताणां स्वाहा ॥ विनाशनां स्वाहा ॥ धूनां
 स्वाहा ॥ कुंभारवाणां स्वाहा ॥ पुत्रनाणां स्वाहा ॥ कटपुत्रनाणां स्वाहा ॥ स्वर्गनां स्वाहा ॥ अपरमाणां स्वाहा ॥ गुप्ताणां
 स्वाहा ॥ द्वापाणां स्वाहा ॥ अपरमाणां स्वाहा ॥ चन्द्रसूर्ययोः स्वाहा ॥ सदाणां स्वाहा ॥ वधूवाणां स्वाहा ॥ दहाणां स्वाहा ॥
 लोहितानां स्वाहा ॥ धूर्वाणां स्वाहा ॥ सिद्धवाणां स्वाहा ॥ सिद्धिवाणां स्वाहा ॥ गीर्वाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥ ताम्रवाणां
 स्वाहा ॥ अश्ववाणां स्वाहा ॥ ताम्रवाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥ चन्द्रवाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥
 अश्ववाणां स्वाहा ॥ चन्द्रवाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥ चन्द्रवाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥ सन्धर्वाणां स्वाहा ॥

હાલથી સમાપ્ત ॥ ॥ તે હમ્મં દેવુપરના દેવુલીમાં સમાપ્ત ॥ ત્યજવણી મિતીથી તે વૃષભાની મહાપ્રભા ॥ ॥ સર્વો
 મુક્તિય સર્વો હાલોંદ નમઃ સંધ્યાય નમો નમઃ ॥ ॥ ધીરમ્ ॥

॥ श्रीहार्म्यमहात्म्यानुसारीणीशारणी ॥

श्रीं नमो भगवते हार्म्यमहात्म्यानुसारीणी ॥ ॥ तव धाम्ना भगवान्मन्दरासन्धवनेभ्यः ॥ सुवर्गिण महात्म्यानुसारीणी मन्त्रपदाणि
 ज्ञापयेत्तम् ॥ सुमन्त्राश्च यथा ॥ विमरल विमरल विमरल विमरल ॥ ४ ॥ कुट्टी श्रीमानुसंगक आह्वययति ॥ सुन्धल सुन्धल सुन्धल
 सुन्धल ॥ ४ ॥ विद्या विद्यन्तु ॥ विमर्षच्छल विमर्षच्छल विमर्षच्छल विमर्षच्छल ॥ ४ ॥ कुट्टः प्रविशति कुट्टी श्रीमानुसंगक आह्वययति
 ॥ कुम्ब कुम्ब कुम्ब कुम्ब ॥ ४ ॥ रन्ध्रम् रन्ध्रम् रन्ध्रम् रन्ध्रम् ॥ ४ ॥ सुसुम् सुसुम् ॥ २ ॥ सुसुम् सुसुम् सुसुम् सुसुम् ॥ ४ ॥ प्रविशति ॥
 सुम् सुम् सुम् सुम् सुम् सुम् ॥ ६ ॥ मिमि मिमि मिमि मिमि ॥ ४ ॥ मुलीमि मुलीमि ॥ २ ॥ मुलीमि मुलीमि ॥ २ ॥ मुलीमि
 मुलीमि मुलीमि मुलीमि ॥ ४ ॥ मुलीमि मुलीमि ॥ २ ॥ रि रि रि रि रि रि रि रि रि रि ॥ १० ॥ रिमि रिमि रिमि रिमि ॥ २ ॥
 मीमिमीमि ॥ प्रविशति प्रविशति प्रविशति प्रविशति ॥ कंकरा कंकरा कंकरा कंकरा कंकरा कंकरा ॥ १ ॥ कंकरीमीमि कृमिलो कंकरीम

कर्मिणोति ॥ रि रि रि रि रि रि रि रि रि रि ॥ १० ॥ रेकस्मदि ॥ कुमि कुमि कुमि कुमि कुमि कुमि ॥ ५ ॥ सर्वज्ञ आस्तपयति ॥
 प्रोक्ताहीति सर्वकल्पविलोपयामयः कैलिनिहानि कल्पविहानि कुलिनिहानि उपेक्षाविहानि ॥ एते कल्पयज्ञः सिद्धः सिद्धपाथा
 निन्दोदितः ॥ सर्वेषां देवतानां च भूतानां च किर्तिभिरा ॥ ज्ञानेनादीनवेनाद्यलदाऽस्मत्तपयति च ॥ ॥ स्वस्ति नः कुरुतां कुरुः
 स्वस्ति देवाः सातपथ्यः ॥ स्वस्ति स्वर्गाणि भूतानि सर्वज्ञानं ज्ञानं च कुरुतुम्यानुभावेन देवतानां ज्ञानेन च ॥ वीवीवी नमोभित्तः
 सर्वोवीद्यस्तुष्टयानां ॥ स्वस्ति वी द्विपदे श्रीन्तु स्वस्ति वीन्तु चतुष्पदी ॥ स्वस्ति वी त्रयस्तु मागे स्वस्ति प्रत्यक्षतेत्युच ॥ स्वस्ति
 रावी स्वस्ति दिवा स्वस्ति रात्रि दिने तिहने ॥ सर्वज्ञ स्वस्ति वी श्रीन्तु सर्वेषां पापमागमत् ॥ सर्वमात्मा सर्वज्ञात्मा सर्वभूताश्च
 लोकताः ॥ सर्वे वै मुक्तिनः कन्तु सर्वे कन्तु विगमयाः ॥ सर्वे जडाणि परमन्तु वा कतिचलक्षणभानमन्तु ॥ खनीह भूतानि समानतानि

शिवात्मिन् प्रमोदयमान्महीशे ॥ कुरुन्तु मयी सख्यं कृतान् दिवा च रात्रौ च चरन्तु धाम्ने ॥ इति सप्त कुटानां कुटानुभावेन विजयानां
 देवतानुभावेन महतीतिर्लुपलात्म्येति ॥ ॥ अर्घ्यमहात्मन्यानुभविषीन्नामपान्यममन्यदास्यौ सम्यग्ता ॥ ॥ ये धाम्नी हेतुजभावा
 हेतुल्लेखं लब्धवन्तः ॥ तद्वदस्ते विनेष्टे च कुर्यान्मयी महाभयम् ॥ सखी कुटाय ॥ सखी धाम्नीय ॥ यमः संज्ञाय ॥ ॥
 सखी धाम्नील्लब्धं लब्धवन्तः ॥ ॥ सुजमस्तु सर्वज्ञवर्त्ता ॥